डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज आरा

classmate
Date 06/05/20
Page

विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र (पारिभाषिक शब्दावली)

(1) आर्धधातुक- आर्धधातुकं शेषः । 3/4/114

अर्थः- तिङ्शिद्भ्योऽन्यः 'धातोः' इति विहितः प्रत्यय आर्धधातुक-संज्ञः स्यात् ।

तिङ् और शित् प्रत्ययों को छोड़कर अन्य जिन प्रत्ययों का धातु से विधान किया गया है, उनकी आर्धधातुक-संज्ञा होती है।

यथा- भू + तास् + तिप् = भविता यहाँ 'भू' धातु से 'तास्' प्रत्यय हुआ है। यह प्रत्यय धात्वधिकार में है और तिङ् और शित् से भिन्न भी है। अतः प्रकृत सूत्र से 'तास्' की आर्धधातुक संज्ञा होती होती है।

(2) सर्वनामस्थान- सुडनपुंसकस्य । 1/1/43

अर्थः- स्वादि पञ्चवचनानि सर्वनामस्थानसंज्ञानि स्युरक्लीबस्य ।

नपुंसक से भिन्न सुट् (सु, औ, जस्, अम् और औट्) की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

(3) घि- शेषो घ्यसखि । 1/4/7

अर्थः- अनदी संज्ञौ ह्रस्वौ याविउतौ तदन्तं सखिवर्जं घिसंज्ञं स्यात् ।

'सखि' शब्द को छोड़कर नदीसंज्ञक भिन्न ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्द घिसंज्ञक होते हैं। नदी संज्ञा दो अवस्थाओं में नहीं होती है।

Scanned with CamScanner

① पुल्लिंग में ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्द नदी संज्ञक नहीं होते। जैसे - हरि, भानु, गुरु आदि।

② स्त्रीलिंग में ङित् विभक्तियों के परे होने पर जब 'ङिति ह्रस्वश्च' 1।4।6 द्वारा नदी संज्ञा नहीं होती है। इस प्रकार इन दो स्थलों पर ही घिसंज्ञा प्राप्त होती है।

⑤ आत्मनेपद - तङानावात्मनेपदम्। 1।4।100
अर्थः - तङ् प्रत्याहारः शानच्कानच्यौ च आत्मनेपद-संज्ञाः स्युः।
तङ् (त, आताम्, झ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इट् वहि, महिङ्) और आन (शानच् और कानच्) की आत्मनेपद संज्ञा होती है।

अनुदात्तङित आत्मनेपदम्। 1।3।12
अर्थः - अनुदात्तेतो ङितश्च धातोरात्मनेपदं स्यात्।
जब अनुदात्तेत् और ङित् धातुओं से तङ्, शानच् और कानच् प्रत्ययों का विधान हो तब इनकी आत्मनेपद संज्ञा होती है।

स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले। 1।3।72
अर्थः - स्वरितेतो ञितश्च धातोरात्मनेपदं स्यात् कर्तृगामिनि क्रियाफले।
जब स्वरितेत् और ञित् धातुओं से

Scanned with CamScanner

तङ्, शानच् और कानच् प्रत्ययों का विधान हो तो उनकी आत्मनेपद संज्ञा होती है यदि क्रिया का फल कर्तृगामी हो।

(5) परस्मैपद- शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्। 1|3|78
अर्थः- आत्मनेपदनिमित्त हीनाद् धातोः कर्तरि परस्मैपदं स्यात्।
शेष से कर्ता में परस्मैपद हो।
आत्मनेपद संज्ञा सामान्यतः इन अवस्थाओं में होती है- 1- भाववाच्य और कर्मवाच्य में, 2. अनुदात्तेत्, 3. ङित्, 4. स्वरितेत् कर्तृगामी क्रियाफल होने पर, और 5. णित् कर्तृगामी क्रियाफल होने पर।
सूत्र में 'शेष' कहने का यही तात्पर्य है कि इन अवस्थाओं को छोड़कर शेष में कर्तृवाच्य में परस्मैपद का विधान होता है।
उदाहरण के लिए 'भू' धातु से आत्मनेपद का कोई निमित्त नहीं है अतः उससे परस्मैपद होगा।

Scanned with CamScanner